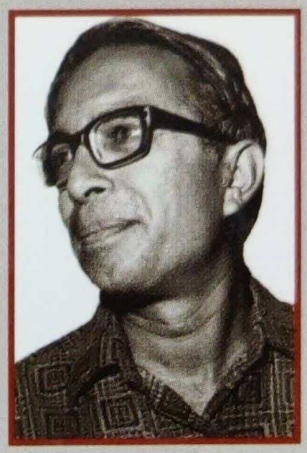

शरद जोशी के

साहित्य में व्यंग्य

डॉ. संतोष विजय येरावार

शरद जोशी के साहित्य में व्यंग्य

डॉ. येरावार संतोष विजयराव

वान्या पब्लिकेशन, कानपुर

मूल्य : पाँच सौ पचहत्तर रुपये मात्र

पुस्तक	:	शरद जोशी के साहित्य में व्यंग्य
लेखक	:	डॉ. येरावार संतोष विजयराव
प्रकाशक	:	**वान्या पब्लिकेशन** 3A/127 आवास विकास, हंसपुरम कानपुर– 208 021
संस्करण	:	प्रथम, 2016
आवरण-सज्जा	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
शब्द-सज्जा	:	रिचा ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	साक्षी आफसेट, कानपुर
मूल्य	:	575/-
I.S.B.N.	:	978-81-924891-4-8

अपनी बात

आज वही साहित्य महत्त्वपूर्ण है जो हमारे वास्तविक तथा वर्तमान जीवन से जुड़ा है। व्यंग्य जीवन और जगत की प्रतिछाया होता है। वह व्यवस्था में व्याप्त समस्याओं पर दृष्टिपात मात्र नहीं करता, वरन् हमें उन समस्याओं से जूझने की चेतना और शक्ति प्रदान कर सावधान भी करता है। व्यंग्य समाज का सच्चा सचेतक, मार्गदर्शक तथा उन्नायक है। व्यंग्य जीवन को अधिक स्वस्थ, अधिक सुन्दर, अधिक भव्य और अधिक उदात्त बनाने के लिए अमानवीय, भ्रष्ट, कलुषित परम्पराओं, बाह्य आडम्बरों, रीतियों और धारणाओं पर प्रहार करता है। अन्तर्विरोध, शोषण, अनीति, विषमता, आक्रोश तथा सामाजिक एवं व्यक्तिगत मूल्यों का खण्डन करता है। इस दृष्टि से कालजयी रचनाकार शरद जी सफल रचनाकार हैं।

व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के विकास में बाधित होने वाली सभी व्यवस्थाओं पर शरद जी ने व्यंग्य किए हैं। उनका व्यंग्य सर्वसमावेशक एवं समस्याविहीन समाज कल्पना को जन्म देता है। सोई हुई चेतना को झकझोर कर मानवीय जागरूकता उत्पन्न करने का साहसिक प्रयास उन्होंने किया। सामाजिक विकृतियों से लड़ने हेतु जो व्यंग्य रूपी हथियार इस्तेमाल किए वह अन्य हथियारों से कहीं ज्यादा अधिक प्रभावी सिद्ध हुए हैं। व्यंग्य को लोकव्यापी, लोकप्रिय एवं प्रबल बनाकर नयी गरिमा, नयी पहचान, नयी दिशा, नयी ऊँचाई तथा सार्थक विस्तार देने में इनका लक्षणीय योगदान है। जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण, नयी आस्वादन क्षमता, व्यापक दृष्टिकोण तथा नूतन जागृति में विशेष योगदान दिया।

जीवन की चौतरफा विसंगतियों से जोशी का संवेदनशील मन-मस्तिष्क झंकृत होता है। वे साधारण विकृतियों से लेकर व्यापक एवं गम्भीर, विद्रूप की विकरालता को एवं राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय समस्या को सहज ढंग से निरुत्तर करते हैं। इसीलिए आम जनता उनकी रचनाओं से आत्मविश्वास और साहस प्राप्त करती रहती है। उन्होंने विकृति के प्रति कभी सहानभूति नहीं दर्शाई, हर विकृति पर निर्भीकता से बिना हिचकिचाहट पैनी राय कायम करना और उसे लोगों तक पहुँचाना उनका कर्म बन गया था। उन्होंने परिणामों की चिन्ता न करते हुए अपना सामाजिक दायित्व भली-भाँति निभाया। मानवतावादी दृष्टिकोण, विश्वबंधुत्व का भाव एवं समन्वय की भूमिका उन्होंने बखूबी निभाई।

शरद जी का साहित्य मार्गदर्शन का, समाजसुधार का, नवनिर्माण का, आत्म-अन्वेषण का, आत्म-सुधार का एवं चेतना का साहित्य है। उनका व्यंग्य घोर

परिस्थितियों से जूझने का मनोबल एवं हथियार है। अपने मूल्यों, विश्वासों, सभ्यताओं और आस्थाओं से जुड़े रहने का माध्यम है। विकृतियों के प्रति संघर्षशील मुकाबला है। उनके व्यंग्य राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आर्थिक क्षेत्र में व्याप्त बेईमानी, भ्रष्टाचार, झूठ, अन्याय, अनीति और अमानवीयता पर विषाक्त प्रहार करते हैं। वे आम आदमी के विडम्बनापूर्ण और विश्रृंखलित जीवन, उसकी टूटन, तनाव और दयनीय स्थितियों पर मजबूती से अपनी उँगली रखते हैं। पतित मानव मूल्यों, सामाजिक, राजनीतिक व्यवस्था की विसंगतियों-विरोधाभासों, प्रसिद्धि और महानता की आड़ में छुपे सफेद वस्त्रधारियों को अपनी लेखनी का निशाना बनाते हैं। साहित्य के दलालों और पाखण्डियों को भी उन्होंने नहीं बख़्शा। अपने अन्तर्हित लगाव, जागरूकता और चौकन्नेपन से विकसित उनकी जीवन-दृष्टि पाठकों को भी जागरूक बनाती है। समस्या के प्रति सचेत कर जूझने की शक्ति भी प्रदान करती है। उनका व्यंग्य तत्कालीन सर्वहारा वर्ग का, समाज का अकूत दर्पण था।

राजनीति में व्याप्त ढोंग, दम्भ, गुंडागर्दी, नीचता, आश्वासन प्रधानता, चरित्रहीनता, मूल्यहीनता, स्वार्थ, हिंसा, अन्याय एवं अत्याचार, चापलूसी वृत्ति, घरानेशाही, कुर्सी संस्कृति, दलाली तथा भ्रष्टाचार को उघाड़ने वाला साहित्य है, जो आज भी उतना ही प्रासंगिक बन पड़ता है। स्वातंत्र्योत्तर भारत का यथार्थ चित्रण उनके साहित्य में उभरकर आया है। उन्होंने बड़ी चतुराई से राजनीतिक अन्धेरगर्दी को उघाड़ा है।

धार्मिक क्षेत्र में फैली स्वार्थता, अंधश्रद्धा, लूटमार, धर्म के ठेकेदारों की ढोंगी वृत्ति, बाह्य आडम्बर, चरित्रहीनता एवं बेशर्मी को जनता के सामने नंगा किया और ऐसे पाखण्डी बाबाओं से बचने का सुझाव दिया। सांस्कृतिक, धार्मिक आदर्श आज समस्त कुकर्मों के ढक्कन-भर बनकर रह गए हैं। धर्म के नाम पर व्यभिचार और अनीति बढ़ी है। विविध धार्मिक आयोजन मन में शंका पैदा करने लगे हैं। वर्तमान में जडेजा, नित्यानंद, भीमानंद जैसे महाराज को देखकर लगता है कि धर्म अपना वास्तविक रूप खो बैठा है। शरद जी का साहित्य वर्तमान में भी उतना ही उपयोगी बन पड़ा है, जितना वह तत्कालीन समय में था।

सामाजिक विषमता, मूल्यों का पतन, दहेजप्रथा, संस्कृति का ह्रास, स्त्रियों एवं गरीबों की शोचनीय अवस्था, किसानों की खस्ता हालत, शैक्षिक पाखण्ड, भाषावाद, प्रांतवाद एवं जमातवाद इन सभी समस्याओं पर शरद जी ने अपने व्यंग्य बाणों से प्रहार किया। सारी समस्याओं ने आज अत्यंत विकृत रूप धारण कर लिया है। महँगाई, भ्रष्टाचार, कालाबाजारी एवं आतंकवाद रूपी राक्षस आज भारतीय समाज को निगलने की तैयारी में है।

आतंकवाद एवं आतंकवादियों के विरुद्ध घोषणाएँ, बयानबाजी, आश्वासन,

वार्ताएँ एवं समझौतों को छोड़ जब तक भारत कारगर एवं कठोर नीति नहीं अपनाएगा, कानून एवं न्याय व्यवस्था में सुधार नहीं लाएगा तब तक आतंकवाद का सफाया नहीं होगा, यह अनमोल उपदेश शरद जी ने साहित्य के माध्यम से दिया था, परंतु विडम्बना यह कि इसे नजरअंदाज कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप वर्तमान में आतंकवाद रूपी अजगर हत्या और डर का नंगा नाच कर रहा है।

उनका व्यंग्य कर्मशील था, इसीलिए वह पुस्तकीय सामग्री तक सीमित नहीं रहा। गद्य व्यंग्य को कविता के मंच पर प्रतिष्ठित करना उनके सृजन क्षमता, साहस और प्रभाव का परिचायक है। व्यवस्था में व्याप्त ऐसी शायद ही कोई विकृति एवं विषमता होगी जो, विद्रोही तथा क्रांतिकारी शरद जोशी के विषैले बाणों से अपना दामन बचा पाई हो।

वर्तमान परिवेश में मनुष्य भौतिक सुखों के प्रति लालायित हो रहा है। मानव में धन की अति अभिलाषा होने के कारण समाज में भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, कमीशन, चोरबाजारी आदि अनैतिक मार्ग से धन कमाने की लोगों की प्रवृत्ति बन गई है। आज का मनुष्य नीतिमूल्यों को भूलकर आतंकवाद, भ्रष्टाचार, जातिवाद, भाषावाद, प्रांतवाद, धर्मवाद, बाह्याडम्बर, कर्मकांड, सामाजिक, धार्मिक अन्ध-विश्वास, हिंसा, दंभ, पाखण्ड, अन्याय, अत्याचार एवं भेदभाव भरी राजनीति को अपना रहा है। आज धार्मिक परिवेश में हिन्दू और मुसलमानों में धर्म तथा साम्प्रदायिकता के नाम पर दंगे-फसाद हो रहे हैं। राममंदिर-बाबरी मस्जिद, गोधरा हत्याकांड, मुंबई आतंकवादी हमला एवं अक्षरधाम हमला जैसी हिंसक घटनाएँ रोज देश के किसी ना किसी कोने में घटित हो रही हैं। शरद जोशी का साहित्य अपने व्यंग्यात्मक वाणी से विकृतियों को बेपर्दा कर इन्सान को इन्सानियत की राह पर चलने की नसीहत देता है। इसलिए आज के लोगों को कर्मकांड, कुत्सित तथा भ्रष्ट मार्ग से सत्मार्ग की ओर उन्मुख करने के लिए शरद जोशी का व्यंग्य साहित्य तत्कालीन समय से अधिक प्रासंगिक है।

"शरद जोशी के साहित्य में व्यंग्य" विषय पर प्रस्तुत शोध कार्य उनकी व्यंग्य दृष्टि, व्यवस्था में व्याप्त विकृति को यथार्थता के साथ उघाड़ने की उनकी अद्भुत क्षमता, राजनीतिक विकृतियों का विस्तृत सर्वांगीण चित्रण एवं उनके समाज निर्माण के कार्य को जानने, परखने का मौलिक प्रयास है। शरद जी ने स्तंभ के माध्यम से रोज एक नई समस्या को उघाड़ा, उसे नई दृष्टि से देखा-परखा और पाठकों तक पहुँचाया। इस मानव जीवन को संबोधित करनेवाले व्यंग्य कर्म को जानने परखने का मेरे विचार से पहला प्रयास है। प्रासंगिकता के दृष्टि से शरद जोशी के साहित्य का अध्ययन नवीनतापूर्ण है।

प्रबन्ध योजना का संक्षिप्त परिचय

प्रथम अध्याय 'शरद जोशी का जीवन परिचय' में शरद जोशी के व्यक्तित्व

एवं कृतित्व सम्बन्धी तथ्यों का संक्षिप्त परिचय देने का प्रयास किया गया है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य निबन्ध के प्रमुख हस्ताक्षरों में जोशी जी का दृष्टिकोण सर्वथा पृथक धरातल पर परिलक्षित होता है। इनके बहुमुखी प्रतिभासंपन्न, प्रभावी, विद्रोही एवं प्रखर व्यक्तित्व को शब्दों का जामा पहनाना कठिन है फिर भी उपलब्ध तथ्यों के अंतर्गत उनका पारिवारिक जीवन, जन्म, माता, पिता, शिक्षा, स्वभाव एवं रुचि को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। बाह्य आडम्बरों पर प्रभावी रूप से प्रहार करनेवाली इनके व्यंग्य साहित्य की सूची भी दी गई है। शरद जोशी जैसे प्रतिभासंपन्न व्यंग्यकार के योगदान, व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालने के लिए कुछ विचारवंतों के दृष्टिकोण विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

द्वितीय अध्याय 'शरद जोशी के निबन्धों में व्यंग्य' में शरद जोशी के निबन्धों द्वारा व्यवस्था में व्याप्त विसंगति, विद्रूपता, विडंबना तथा विकृतियों को उजागर करने का प्रयास किया गया है। स्वतंत्र भारत की भ्रष्ट, खोखली, स्वार्थी, नीच, पाखण्डी, दंभी, चरित्रहीन, मूल्यहीन तथा सड़ी-गली राजनीति एवं सत्तालोलुप, दलबदलू, दोगले, अत्याचारी, अन्यायी, अविचारी, अज्ञानी, मूर्ख, भ्रष्ट तथा व्यक्तित्वहीन नेताओं पर किए गये कटु व्यंग्य प्रहारों का अध्ययन करने की कोशिश की गई है। शासन प्रणाली में व्याप्त धाँधली, अराजकता, रिश्वतखोरी एवं लालफीताशाही, सामाजिक क्षेत्र में व्याप्त विषमता, स्त्री समस्या, दहेजप्रथा, गरीबों एवं हरिजनों की दयनीय अवस्था, मध्यवर्गीय प्रवृत्ति एवं सामाजिक मूल्यों का पतन आदि का व्यंग्यपूर्ण चित्र खींचा है। इन सभी व्यंग्य चित्रों का आकलन और विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। साहित्य, धर्म, संस्कृति, अर्थ, शिक्षा आदि क्षेत्र में फैली अनेकविध विकृतियों पर शरद जी द्वारा किए गये व्यंग्य का विश्लेषण करने का प्रयत्न किया गया है।

तृतीय अध्याय 'शरद जोशी के स्तंभ लेखन में व्यंग्य' में शरद जोशी के स्तंभलेखन में व्याप्त राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक, साहित्यिक, धार्मिक आदि क्षेत्र में व्याप्त विकृतियों को उजागर कर विवेचन एवं विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। शासक और शासन में व्याप्त पाखण्ड, ढोंग तथा विलासिता, राजनीति में व्याप्त गुंडागर्दी, चुनावप्रधान राजनीति, भारत सरकार की नीतियाँ, अमेरिका, पाकिस्तान, कॅनाडा, इजराइल, ब्रिटेन, स्वीडन, श्रीलंका, अफ्रीका, बांग्लादेश तथा इराक-ईरान सरकार की नीतियों में व्याप्त विद्रूपताओं पर किए गए प्रहारों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। उन्होंने बिहार, पंजाब, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, गोवा आदि राज्यों में व्याप्त समस्याओं को भी उघाड़ा है। भाषावाद, प्रांतवाद, जमातवाद, लोकसभा, राज्यसभा, विधानसभा, विभिन्न नेता, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, राष्ट्रपति, राज्यपाल, न्याय एवं पुलिस व्यवस्था, रेल्वे एवं

पोस्ट व्यवस्था, जाँच समिति आदि पर व्यंग्य बाणों से प्रहार किया है। इन सभी का अध्ययन एवं विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

चतुर्थ अध्याय 'शरद जोशी के नाटकों में व्यंग्य' में 'एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ' एवं 'अंधों का हाथी' इन व्यंग्य नाटकों द्वारा व्यवस्था में व्याप्त विकृतियों को उघाड़ा है। अलादाद खाँ, कोतवाल, जुग्गन धोबी, देवीलाल पानवाला, नागरिक, चिन्तक, रामकली, नत्थूदरजी, सूत्रधार, कोरस गायक एवं अन्धों के माध्यम से शरद जी ने राजनीति, समाज और शिक्षा क्षेत्र में फैली विकृतियों पर व्यंग्य किया है। इन सबका विवेचन एवं विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

पंचम अध्याय 'उपसंहार' में प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया है। शरद जोशी के व्यंग्य साहित्य सम्बन्धी उपलब्धियों की चर्चा करते हुए व्यंग्य के विभिन्न रूपों का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया गया है।

अनुक्रमणिका

1.	शरद जोशी का जीवन परिचय	15
2.	शरद जोशी के निबन्धों में व्यंग्य	30
3.	शरद जोशी के स्तंभ लेखन में व्यंग्य	120
4.	शरद जोशी के नाटकों में व्यंग्य	186
5.	उपसंहार	227
	सन्दर्भ-ग्रंथ	245

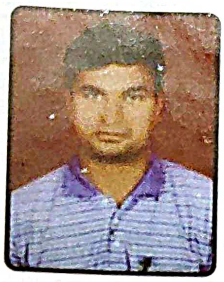

डॉ. संतोष विजय येरावार

जन्म-

27 सितम्बर 1979 नांदेड

शिक्षा-

स्वा.रा.ती. मराठवाडा विश्वविद्यालय नांदेड से एम.ए.,बी.एड., एम.एस. डब्ल्यू, पी- एच.डी.नेट

लेखन-

विभिन्न पत्र- पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित, राष्ट्रीय- अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में आलेख वाचन

लेखन-

भारतीय पाश्चात्य साहित्य (प्रकाशनाधीन)

संपादन-

सामाजिक सरोकर के समन्वयवादी रचनाकार बाबा नागार्जुन

विशेष-

राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी एवं विभागीय समन्वयक

सम्प्रति-

अध्यक्ष – हिन्दी विभाग–देगलूर महाविद्यालय देगलूर– जि0 नांदेड (महाराष्ट्र) 431717

सम्पर्क-

सिद्धिविनायक अपार्टमेंट, लाईन गल्ली देगलूर– जि0 नांदेड (महाराष्ट्र) 431717

दूरभाष - 08087004972

ईमेल : ysantosh2723@gmail.com

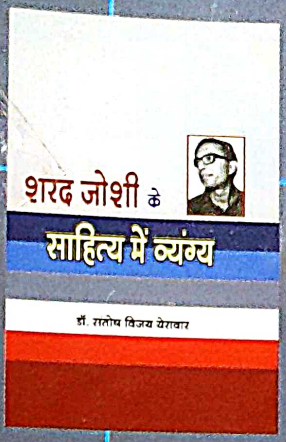

Vanya

वान्या पब्लिकेशंस

3A-127 आवास विकास, हंसपुरम, नौबस्ता, कानपुर-208 021

मोबाइल : 7309038401

E-mail : vanyapublicationskanpur@gmail.com

ISBN 978-81-924891-4-8

9 788192 489148 >

₹ 575.00